

2006 की प्रथम तिमाही तक संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) समग्र देश में सम्पन्न हुआ है। कार्यक्रम अब द्वितीय चरण में प्रवेश किया है और प्राप्त किए गए लाभों को ठोस आधार देने का लक्ष्य रखता है, ताकि उपलब्धियों को संपोषित करने के अलावा क्रियाकलापों एवं लक्ष्यता के तौर पर सेवाओं को व्यापक बना सके। द्वितीय चरण में संप्रेषण तथा सामाजिक एकत्रीकरण के द्वारा सेवाओं के लिए माँग उत्पन्न करते हुए, समाज के उपेक्षित वर्गों तक पहुँचने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। देश में आरएनटीसीपी के निष्पादन से हमारे सांख्यिकीय अनुभाग के लेखकों द्वारा किए गए विश्लेषणानुसार 2007 की तृतीय तिमाही तक पंजीकृत नए लेपन सकारात्मक रोगियों का रोग संसूचन एवं रोग मुक्ति का दर स्पष्ट हुआ। लोक स्वास्थ्य में सांख्यिकी की भूमिका एवं निगरानी प्रणाली के निर्माण में उसके अनुप्रयोग का विस्तृत वर्णन दूसरे लेख में किया गया है। लेखक ने हमारे पाठकों की बेहतर जानकारी के लिए आंकड़ों का संगत सूचना में अनुवाद एवं योजना बनाने में उसका योगदान और मूल्यांकन के महत्व को भी उजागर किया है।

ऐतिहासिक तौर पर, जैविक रोगों का, जिनमें क्षय रोग भी सम्मिलित है, जो पशु और मानव के बीच सहज रूप से संचरित होते हैं, का मानव की उत्पत्ति पर अत्यधिक असर था एवं विश्वस्तरीय अर्थव्यवस्था तथा स्वास्थ्य पर उनका प्रभाव सर्वविदित है। पशु से मानव तथा उल्टा, क्षय रोग संचरण के उदाहरण हैं, विशेषतया उन समाजों में जहाँ पशुओं को आहार एवं पहनावे के लिए पाला जाता है। प्राणिविज्ञान के व्यवस्थापन में क्षय रोग के एक दिलचस्प मामला अध्ययन ने दर्शाया है कि संवर्धन सकारात्मक के तौर पर पशु परिचर से चिड़ियाघर के प्राणी को यह संचरण हो सकता है। चिड़ियाघर के पशु की फुफुस झिल्लियों से *एम.ट्यूबरकुलोसिस* के आई एन एच-प्रतिरोधी उपभेद प्राप्त किए गए। भारतीय स्थितियों में क्षय रोग का महत्व एवं संस्तुत जन स्वास्थ्य उपायों का सुझाव लेखक द्वारा इस पत्रिका के समीक्षा लेख में पेश किया गया है।

प्राथमिक स्वास्थ्य अनुरक्षण स्तर पर संरचना का सशक्तिकरण तथा गहन संचरण आधारित स्वास्थ्य शिक्षा अभियान, जिनका विशेष लक्ष्य-केंद्र महिलाएँ हैं, पर कर्नाटक के दक्षिण कन्नड जिले में क्षय रोगियों के चिकित्सीय-जानपदिक रोग वैज्ञानिक अध्ययन में प्रकाश डाला गया है। मंगलूर के एक शिक्षण अस्पताल में संचालित अध्ययन सार्वजनिक-निजी साझेदारी के लिए अनुकरणीय है। उसके लेखक समय पर जाँच तथा सह-रुग्णता अवस्थाओं के निवारण की सलाह देते हैं, जो क्षय रोगियों के बीच उच्च मृत्यु दर को प्रायः घटा सकता है। आरएनटीसीपी के अंतर्गत चिकित्सा प्राप्त क्षय रोगियों पर डीओटीएस की प्रभावोत्पादकता पर समुदाय चिकित्सा विभाग, जी. आर. मेडिकल कॉलेज, ग्वालियर द्वारा छः डीओटीएस केंद्रों पर सम्पन्न अध्ययन में देखा गया कि उच्चतर रोगमुक्ति एवं थूक परिवर्तन दर का श्रेय, स्वास्थ्य और अन्य सहायता कार्मिकों के, क्षय रोगियों को प्रेरित करने के साथ साथ उनके सख्त अधीक्षण तथा निगरानी के रूप में, ठोस प्रयासों को जाता है।

एनटीआई में प्रशिक्षण व अधीक्षण क्रियाकलाप बढ़ते जा रहे हैं एवं नियमित आरएनटीसीपी माड्युलार प्रशिक्षण और क्षय रोग नियंत्रण के प्रयोगशाला संबंधित पहलुएँ इसमें शामिल हैं। इस पत्रिका में अन्य पत्रिकाओं से संकलित क्षय रोग संबंधी लेखों के सार भी उपलब्ध हैं। इस पत्रिका की अन्य विशिष्टताओं में शामिल हैं, चिकित्सीय/ अर्धचिकित्सीय/ स्नातकपूर्व छात्रों के लिए एनटीआई में संचालित विभिन्न अभिविन्यास प्रशिक्षणों के अलावा संकाय द्वारा एनटीआई के बाहर संचालित अन्य संबद्ध क्रियाकलापों में प्रतिभागिता। इस पत्रिका के समाचार एवं विचार स्तम्भ द्वारा एनटीआई की एक झलक और भेंट करते प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ अमूल्य अन्योन्यक्रिया भी इस अंक में समाहित हैं।

अपने पाठकों को हम उपयोगी पठन की कामना करते हैं एवं आशा करते हैं कि उनका पुनर्निवेश अन्यो के अनुभवों एवं ज्ञान के प्रसरण को और बढ़ाने के अलावा क्षय रोग के विरुद्ध हमारी साझेदारी को निर्मित करने एवं सशक्त बनाने में सहयोगी होगा।

Editorial

Revised National Tuberculosis Control Programme (RNTCP) has covered the entire country by the first quarter of 2006. The programme has now entered in its second phase and aims to consolidate the gains made, to widen services both in terms of activities and access, besides sustaining the achievements. Special provisions to reach marginalized sections of the society, including creating demand for services through communication and social mobilization have been made in the second phase. Performance of RNTCP in the country showed case detection and cure rates of new smear positive cases registered till third quarter of 2007 on expected lines as analysed by the authors from our Statistical Section. Role of statistics in public health and its application in making up the surveillance system is well described in another article. The author has also highlighted the importance of translation of data into relevant information besides its contribution in planning and evaluation for the better understanding of our readers.

*Historically, zoonotic diseases that are naturally transmitted between animal and man including tuberculosis had a tremendous impact on the evolution of man and their effect on the global economy and health is well known. There are evidences of TB transmission from animal to man and vice versa, especially in societies where animals are domesticated and bred for food and clothing. An interesting case report of TB in a zoological setting have shown the possibility of transmission from animal attendant to a zoo animal, as a culture positive INH-resistant strain of *M. tuberculosis* was recovered from the lung tissue of a zoo animal. As such, zoonotic importance of TB under Indian situation and recommended public health measures has been suggested by the author in a review article of this Bulletin.*

Strengthening of infrastructure at primary health care level and intensive communication based health education campaigns targeting women in particular have been highlighted in a clinical-epidemiological study of TB patients in Dakshina Kannada district of Karnataka. The study carried out in a teaching hospital in Mangalore is exemplary of public-private partnership. Its authors also advocate for the timely referral and prevention of co-morbid conditions which may probably reduce the high mortality rate among TB patients. In another study carried out at six DOTS centres by the Department of Community Medicine, G.R. Medical College, Gwalior, on the effectiveness of DOTS on TB patients treated under RNTCP, observed that high cure and sputum conversion rates were attributed to the concrete efforts of the health and other support personnel, in the form of their strict supervision and monitoring along with motivation of TB cases.

Training & supervisory activities at NTI continue to increase and comprise of regular RNTCP modular training and laboratory related aspects of TB control. This bulletin also provides the abstracts of TB related articles compiled from other Journals. Other features of this Bulletin cover various Orientation trainings conducted at NTI for the medical / paramedical / undergraduates besides participation of faculty in other related activities conducted outside NTI. A glimpse of NTI through News & Views column of this bulletin and valuable interaction with the visiting dignitaries are also covered in this issue.

We wish our readers useful reading and hope their feedback will further enhance dissemination of knowledge and experience of others besides building and strengthening our partnership in fight against tuberculosis.

Editor